विद्याभवन बालिका विद्यापीठ लखीसराय

कक्षा -षष्ठ दिनांक -29-06-2020

विषय -हिन्दी विषय शिक्षक -पंकज कुमार

सुप्रभात बच्चों आज पाठ -4 नर हो न निराश करो मन को नामक शीर्षक के बारे में अध्ययन करेंगे।

नर हो, न निराश करो मन को

कुछ काम करो, कुछ काम करो
जग में रह कर कुछ नाम करो
यह जन्म हुआ किस अर्थ अहो
समझो जिसमें यह व्यर्थ न हो
कुछ तो उपयुक्त करो तन को
नर हो, न निराश करो मन को

संभलों कि सुयोग न जाय चला
कब व्यर्थ हुआ सदुपाय भला
समझो जग को न निरा सपना
पथ आप प्रशस्त करो अपना
अखिलेश्वर है अवलंबन को
नर हो, न निराश करो मन को

जब प्राप्त तुम्हें सब तत्त्व यहाँ
फिर जा सकता वह सत्त्व कहाँ
तुम स्वत्व सुधा रस पान करो
उठके अमरत्व विधान करो
दवरूप रहो भव कानन को
नर हो न निराश करो मन को

निज़ गौरव का नित ज्ञान रहे
हम भी कुछ हैं यह ध्यान रहे
मरणोंत्तर गुंजित गान रहे

सब जाय अभी पर मान रहे
कुछ हो न तज़ो निज साधन को
नर हो, न निराश करो मन को

शब्दार्थ

जग - संसार

निज - अपना

अर्थ मतलब से

व्यर्थ बेकार

तन शरीर

निरा केवल

सुयोग अच्छा अवसर

गृहकार्य –

(क) नर हो न निराश करो मन कविता कौन से कवि की है ?

(ख) यशोधरा, साकेत, जयभारत रचनाएँ किसकी है ?

(ग)मैथलीशरण गुप्त का जन्म कब हुआ था?

उपर्युक्त प्रश्नों के उत्तर पूर्व दिए गए अध्ययन सामग्री के अनुसार दीजिए एवं कविता को लिखकर याद कीजिए।